© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

जयशंकर प्रसाद के नारी पात्र

डॉ शशी सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश

इस लेख में हम बताना चाहते है कि जयशंकर प्रसाद सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं राष्ट्रीय चेतना के भावों से पूरित निराशा और अवसादपूर्ण युग में नाट्य रचना में प्रवृत्त हुए अपने आदर्श विचारों से युक्त होने के कारण ऐसे नाटकीय चरित्रों का निर्माण किया जिन्होंने संस्कृति राष्ट्र प्रेम, बलिदान आदि मूल्यों के द्वारा समाज को नई दृष्टि प्रदान की। इनसे पूर्व के नाटककार ऐतिहासिक, पौराणिक तथा सामाजिक नाटकों का प्रणयन कर रहे थे लेकिन प्रसाद जैसा जीवन का गहन अध्ययन, समस्याओं में संवेग भरने की क्षमता नहीं थी। इसलिए इनके साहित्य में नारी स्वर्गीय सुषमा और गौरव से गौरवान्वित है यथार्थ धरातल पर रहकर जीवन रहस्यों की गुत्थी को सुलझाती है। कामायनी में प्रसाद नारी को श्रद्धामयी मानते हुए कहते है -

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।''

मैंने अपने लेख में प्रसाद द्वारा वर्णित नारी के रूपों की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है।

शब्द कूंची

जयशंकर प्रसाद, 'मल्लिका', अजातशत्रु की 'देवसेना' स्कंदगुप्त की, नारी कोमल, कठोर।

प्रस्तावना

युग प्रवर्त्तक जयशंकर प्रसाद निराशा तथा अवसादपूर्ण युग में नाट्य रचना में प्रवृत्त हुए। अभिव्यक्ति कौशल के आदर्श रूप में ये अतीतकालीन उत्कर्ष का दर्शन लेकर आए। उनकी अन्वेषणशालिनी प्रज्ञा व चिंतनशील प्रतिभा ने अतीत के अंतराल में गहरे उतर कर भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक धरोहर में से ऐसे अमूल्य रत्नों (मूल्यों) का संधान किया जो जनमानस में नई चेतना उन्मेषित कर युग जागरण का संदेश देते हैं। सांस्कृतिक पुनरुत्थान तथा राष्ट्रीय चेतना के भावों से आपूरित होने के कारण प्रसाद जी ने नाटकीय चरित्रें द्वारा मानवता, वीरत्व, देशप्रेम, विश्वमैत्री, करुणा, भव्यता जैसे दिव्य मूल्यों की सार्थक पहचान को पुनजागृत किया।

यों तो प्रसाद युग तक अनेक प्रकार के नाटकों की रचना की जा चुकी थी, परंतु प्रसाद जी जैसा जीवन का गहन अध्ययन, व्यावहारिक जीवन की समस्याओं में भावावेग भरने की क्षमता, अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने नव-प्रस्फुटित पल्लवों से भी कोमल भावों से युक्त नारी तथा वज्र से भी कठोर पात्रों की सर्जना की है। उसके मध्य से प्रवाहित होता हुआ करुणासिक्त तथा विराटतायुक्त रस और उससे ओतप्रोत नारी का सृजन कर उसका चित्रण करना, वस्तुतः सराहनीय कहा जा सकता है। जिसकी सभी विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। श्री जयनाथ नलिन के अनुसार –

'प्रसाद जी ने अपने हृदय की समस्त कोमलता, कल्पना की रंगीनी, भावना की स्निग्धता और कला की सफलता नारी चरित्र के भव्य निर्माण में प्रयुक्त की है।'[1]

नारी पात्रों में उन्होंने कामायनी का 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' वाला दृष्टिकोण चरितार्थ कर दिखाया। इनके नारी पात्रों को देखकर कहा जा सकता है कि उन्होंने प्राचीन खंडहरों में से वे कलापूर्ण प्रतिमाएँ खोज है जो मानव हृदय को आंदोलित कर उसके अंतस्थल को छू जाती है और प्रत्येक व्यक्ति को अहसास दिलाती है, सच्ची मानवता का औचित्य, मानव होने की सार्थकता का। साथ ही कुछ नारी पात्रों को ज्ञान की उस अखंड ज्योति से आलोकित किया है, जो भव्यता के आदर्श को छूती हैं।

प्रसाद जी नर और नारी दोनों में हृदय और मस्तिष्क का संबंध मानते हुए एक को यदि कौतूहल और प्रश्न कहते हैं तो दूसरे को विश्लेषण और उत्तर। उनके अनुसार नारी श्रद्धा है, सृष्टि का गुह्यतम रहस्य है और पुरुष की प्रेरणा शक्ति है। वह ऐसी सबलता का प्रतीक है जिसने अपने तटों को सँवारने के साथ-साथ अपने संसर्ग में आने वाले सभी प्राणियों को भी अपने स्पर्श से निर्मल बनाया। उसकी करुणा, भव्यता तथा विराटता वंदनीय है। वह संसार रूपी नदी में अजस्त्र रूप से प्रवाहित एक ऐसी निर्मल रस की धारा है जो उसकी जड़ता को अपने समर्पण से हर लेती है और अहंकार, आतंक, भय, त्रास सबको अपने प्रवाह में बहा ले जाती है। प्रसाद जी ने नारी को मानवता की भावना से सबसे अधिक प्रेरित दिखाया है क्योंकि नारी की दृष्टि में जो बल तथा कर्त्तृत्व शक्ति है वह मानव जाति का संचालन करने वाली है।

प्रसाद की नारी सृष्टि अत्यंत व्यापक है। एक ओर यदि उन्होंने समाज की साधारण वर्ग की नारियों (जैसे मालविका) का चित्रण किया है तो दूसरी ओर धनी वर्ग तथा राजन्य संस्कृति की प्रतिनिधि नारियों (विजया) का। साथ ही कुछ ऐसे नारी पात्रों का भी चित्रण किया है जे संगीत लहरियों को छेड़ उसमें विलीन हो जाने पर अपने दुःखात्मक क्षणों को विस्मृत कर देती है और सभी भावात्मक संबंधों से ऊपर उठ जाती है (जैसे-देवसेना)। इन नारी पात्रों में वासवी मल्लिका, जयमाला, चंद्रलेखा, पद्मावती भारतीय नारी के भव्यतम रूप में चित्रित की गई है तो दूसरी ओर देवसेना, मालविका, वासवी, मल्लिका आदि नारियों के रूप में प्रसाद ने उन नारियों की कल्पना की है जो पुरुष का पथ प्रशस्त कर उसे भ्रष्ट होने से बचाती है तथा सदैव ममता तथा करुणा की शीतल प्रेममयी धारा द्वारा उसके अहम्मन्यता, स्वार्थपरकता को धो डालती है तथा निरंतर उसके करुणामय हृदय से विश्वमैत्री के स्वर मुखरित होते हैं।

मैंने लेख की सीमा को देखते हुए प्रसाद के नाटकों में से केवल दो नारी पात्रों को ही लिया है। अजातशत्रु की 'मल्लिका' और स्कंदगुप्त की 'देवसेना'।

करुणा की साकार मूर्ति मल्लिका है तो बलिदान का उच्चतम आदर्श देवसेना। करुणाप्लावित हृदय के कारण मल्लिका यदि देवत्व का स्पर्श करती है तो देवसेना प्रेम व व्यथा की करुणामिश्रित रागिनी है। ये दोनों ही पात्र प्रसाद जी की कल्पना का उज्जवलतम रूप है। दीर्घकारायण के ये शब्द नारी अंतर्निहित करुणा के प्रकाश को स्पष्ट करते हैं -

(कठोरता का उदाहरण है पुरुष और कोमलता का विश्लेषण है स्त्री जाति। पुरुष क्रूरता है तो स्त्री करुणा, जो अंर्तजगत् का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरें हुए हैं।) [2]

देवसेना

सृष्टि का सबसे बहुमूल्य रत्न 'नारी' यदि कोमलता का प्रतीक है तो दूसरी ओर यही कोमल नारी समय आने पर बड़े से बड़े, बलिदान करने में पीछे नहीं रहती है कि उसकी विराटता के सामने नतमस्तक होना पड़ता है। इतिहास स्वयं इसका प्रमाण है। कुछ ऐसा ही व्यक्तित्व हम 'देवसेना' का पाते है। देवसेना की कोमल कल्पना प्रणय के मधुमय नीड़ में ही अपना स्वर्ग मानती है। देवसेना प्रसाद की काव्यमयी प्रतिभा द्वारा निर्मित ऐसा गीतिमय नारी पात्र है जो अपने बलिदान से ऐसी करुण गंध विकीर्ण करती है जिसके

कारण पाठक मन में अपूर्व सी कसक महसूस करता है तथा संवेदना मर्मस्पर्शी हो, ऐसी नारी का रूप साकार हो जाता है जो कि जीवन भर निष्काम तथा बिना फल की आकांक्षा किए हुए अपना सर्वस्व स्कंदगुप्त पर न्यौछावर कर देती है। इसी कारण जब देवसेना रोती है तो उसके भीतर की रागिनी होती है और हँसती है तो जैसे विषाद की प्रस्तावना होती है। -(संगीत सभा की अंतिम लहरदार तान और आश्रयहीन तान, धूपदान की क्षीण गंध रेखा, कुचले हुए फूलों का प्लान सौरभ और उत्सव के पीछे के अवसाद की प्रतिकृति, उसका क्षुद्र नारी जीवन स्वयं अपने में एक विडम्बना लगता हैं) [3]

यह उस नारी के जीवन का चिरसत्य है जो कभी न जीती है न मरती है। उपेक्षा, अवहेलना, अत्याचार त्रास, घुटन, कष्ट को सहन करते हुए हर समय उसके भीतर एक नई नारी जन्म लेती है। आजीवन नारी इसी प्रक्रिया से गुजरती है। उसके गले में रस्सी के फंदे डाले रहिए तो क्या उसके प्राण निकलेंगे? अरे! प्राण हो तो निकले ना। उसकी जीवन प्रक्रिया देखते हुए लगता है ईश्वर उसके अंदर प्राण डालना भूल ही गया। तदुपंरात भी बिना प्राणों के जीती हुई भी वह सदैव अपनी दया, ममता, करुणा चारों ओर फैलाती रहती है। वास्तव में उसके साहचर्य के कारण ही मानव मानव कहलाने का अधिकारी होता है। यही करुणासिक्त नारी संपूर्ण रूप से पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरोने के कारण वंदनीय कही जा सकती है। नारी के बाह्य सौंदर्य के कारण यदि जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो उसके आंतरिक सौंदर्य के कारण अंधेरे पथ भी आलोक से जगमगा उठते हैं।

स्कंदगुप्त में विजया द्वारा यह ज्ञात होने पर कि उसने भटार्क का वरण किया है, इस घटना के माध्यम से देवसेना तथा स्कंदगुप्त के व्यक्तित्व का उज्जवलतम पक्ष उभर कर सामने आता है। देवसेना इसी स्थल पर आकाश के टूटे तारे की भाँति स्वयं को पाकर तुरंत आत्मगौरव के भाव से युक्त पाती है। तभी कष्ट को हृदय की कसौटी स्वीकारते हुए स्कंद को आश्वस्त करती है।[4] विजया द्वारा प्रताड़ित होने पर देवसेना द्वारा कहा गया वाक्य (देवसेना मूल्य देकर प्राण नहीं लिया चाहती)[5] नारी प्रेम के आदर्श का द्योतक है। जिसके प्रति वह स्वयं को समर्पित करती है, उसके भी अपने प्रति समर्पित होने की आकांक्षा रखती है। स्कंद के नक्षत्र से भी उज्जवल रूप को देवसेना अपने हृदय का स्वर्ग बना लेती है उसे आराध्य व पूज्य मानती है। कभी भी अपने अटूट प्रेम को प्रकट नहीं होने देती। लेकिन अपने आप को प्रपंचियों के जाल में पाकर, प्राणों की अंतिम बेला समीप समझ उसके कोमल उद्गार पहली बार मुखरित हो भारतीय नारी के आदर्श को दर्शाते हैं - (प्रियतम! मेरे देवता!! तुम्हारी जय हो।)[6] इसी लोक की नारी होने के कारण वह सखियों द्वारा छेड़छाड़ करने पर सिसक उठती है, तभी उसकी सखी नारी अंतर्मन की थाह ले पाती है कि नारी दुख में भी सुखी होने का अनुभव करती है। देवसेना इसलिए पवित्रता, सुख और पुण्य की कसौटी मलिनता, दुःख और पाप मानती है।[7]

नारी अपने प्रेम का निर्वाह एकनिष्ठ होकर करती है। इसके उदाहरणस्वरूप प्रसाद ने देवसेना को रुपायित किया है। देवसेना के माध्यम से संपूर्ण नारी जाति की चिर वेदना प्रकट हो रही है जो अपने अंतर्तम में अतुल रहस्य को छिपाए हुए रहस्यमय जीवन को अपने परिवार, देश, समाज पर न्यौछावर करती हुई अत्यंत कलापूर्ण तथा सबलतापूर्वक जीवन यापन करती है। यहाँ तक कि कई बार अपने आप को बिखराव से बचाती हुई आसमान से भी ऊँची ऊँचाइयों को स्पर्श करती हुई, जीवन को निश्चित दिशा प्रदान करती हुई, एक नदी के प्रवाह की भाँति बढ़ती जाती है। कौन जाने? कि नदी के गुह्यतम पानी के भीतर क्या छिपा है परंतु फिर भी तो (कूलों में उफनकर बहने वाली नदी, तुमुल तरंग, प्रचंड पवन और भयानक वर्षा! परंतु उसमें भी नाव चलानी ही होगी।)[8]

देवसेना के सात्विक प्रेम की अभिव्यक्ति तब होती है, जब कुभा की बाढ़ में स्कंद की सेना बिखर जाने पर स्कंद की कनिष्क के स्तूप के समीप देख देवसेना का हृदय सुमन की तरह खिल उठता है। इस विपन्नावस्था में स्कंद प्रणय का अवलम्ब चाहता है और कहता है - (हम तुम अलग न होंगे। साम्राज्य तो नहीं है, मैं बचा हूँ, वह अपना ममत्व तुम्हें अर्पित करके उऋण होऊँगा)। परंतु देवसेना अपने संपूर्ण जीवन के स्वप्न को अस्वीकार कर एक अभिमानी भक्त के समान निष्काम होकर स्वयं को कामना के भँवर में

फँसकर कलुषित होने से बचा लेती है। सच ही तो है –

इस अर्पण में कुछ ओर नहीं, केवल उत्सर्ग छलकता है।
मैं दे दूँ और न फिर कुछ लूँ इतना ही सरल झलकता है।

वास्तव में जयशंकर प्रसाद ने नारी की दुर्बलता का नहीं अपितु सबलता, शक्ति व साधना का प्रतीक मान उसे सर्वमंगला सिद्ध किया है। प्रसाद नारी को ध्रुव के समान अटल व दृढ़ मानते हैं तो फूल के समान कोमल भी। निस्वार्थ प्रणव के बलिदान रूप में प्रसाद जी की कल्पना का कोमल पुष्प देवसेना जैसा विराट व्यक्तित्व अन्यत्र खोजने पर भी नहीं मिलता है।[9]

मल्लिका

अजातशत्रु की मल्लिका दिव्यता, आदर्शनिष्ठा तथा करुणाप्लावित हृदय के कारण अविस्मरणीय है। प्रसाद जी ने उसे विधाता की सृष्टि का असीम सौंदर्य तथा गौतम बुद्ध की असीम करुणा से ओत-प्रोत दिखाया है। उन्होंने नारी हृदय के प्रत्येक कोने को भली प्रकार से परखा है। नारी-सिक्त करुणा, कोमलता के बल पर उन्होंने मल्लिका को देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इसलिए मल्लिका के मुख से नारी के आदर्श को चरितार्थ किया है।[10]

भारतीय नारी की करुणा का आदर्श रूप मल्लिका में अन्तर्भूत है। स्त्रीसुलभ धैर्य, करुणा, त्याग, क्षमा, बलिदान, पतिव्रता और आदर्श रमणी के गुणों के कारण ही मल्लिका का व्यक्तित्व अप्रतिम है। पति के प्रति अगाध प्रेम का निर्वाह करती हुई वह उनके कर्त्तव्य पथ में किसी प्रकार का कंटक बनना नहीं चाहती। अकस्मात् प्राप्त वैधव्य समाचार से भी मल्लिका विचलित न होकर अत्यंत कष्टमय क्षणों में भी वह कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहती है। उसके द्वारा कहे गए वाक्य उसके विशाल हृदय का परिचय देते है।[11] उसी समय पर बुलाए गए गौतम बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र के आतिथ्य सत्कार में वह किसी प्रकार की कमी नहीं होने देती है। कलेजे पर पत्थर रखकर शांत भाव से वह सारिपुत्र प्रभृति को भोजन कराती है। जिससे प्रभावित होकर सारिपुत्र भी उसकी प्रशंसा किए बिना रह नहीं पाते हैं। अंत में विजय का आशीर्वाद देते हुए उसे करुणा की मूर्ति स्वीकारते हैं -

'मूर्तिमयी करुणे! तुम्हारी विजय हैं।

समय आने पर किसी भी प्रकार की बाधा में भी अटल व दृढ़ रहकर कार्य करना, ऐसी विराटता का प्रतीक है नारी का हृदय जिसकी चिर पावन मूर्ति के रूप में प्रसाद जी ने मल्लिका को चित्रित किया है। जिसके सामने स्वयं देव सदृश ऋषि को नतमस्तक होना पड़ता है।

वस्तुतः मल्लिका अपनी करुणार्द्रता तथा विश्वमैत्री मंत्र द्वारा सभी विद्रोहियों व हिंसक वृत्ति वाले, अजातशत्रु, विरुद्धक, प्रसेनजित्त को क्षमादान देकर हृदय परिवर्तन करने में सफल होती है। इसलिए कहती है (शांति मिले, विश्व शीतल हो)। अपनी इसी उदात्त भावना के कारण वह विश्वमैत्री की परीक्षा में उत्तीर्ण होती है। जब अजातशत्रु क्रोध के कंदुक, क्रूरता के खिलौने, अभिमानी कौशल सम्राट प्रसेनजित को ढूँढ़ता हुआ आता है तब मल्लिका उसे शांत कर अपना परिचय देती है। अपनी जीवन यात्रा में भी नारी अपने आदर्शों के द्वारा सदैव पुरुष का हर क्षेत्र में मार्ग प्रशस्त करती हुई दिखाई पड़ती है। यही मल्लिका भी करती है जिससे अजातशत्रु प्रभावित होकर कौशल पर आक्रमण करने का अपना विचार त्याग देता है।

अजातशत्रु द्वारा यह बताए जाने पर कि तुम्हारे पति की हत्या का उत्तरदायी राजा प्रसेनजित है तब भी बड़े ही विनम्र भाव से अपने पति के हत्यारे को क्षमा कर देती है। इसलिए तो अजातशत्रु उसके देवतुल्य चरित्र पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ कहता है - 'आश्चर्य!

यह देव-कर्तव्य --------।'[12] तभी वह उचित-अनुचित राह का निर्देश करती हुई कहती है कि हम मानव यह समझने की भूल करते हैं कि ऐसे कार्य देवताओं द्वारा किए जाते हैं चिर सत्य यही है कि उपकार, करुणा, सम्वेदना और पवित्रता मानव हृदय के लिए ही बने हैं। प्रसेनजित भी उसके उदार व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कहते हैं - (तुम्हारे मुखमंडल पर तो ईर्ष्या और प्रतिहिंसा का चिह्न भी नहीं है।)[13] विरुद्धक युद्ध स्थल से आहत होकर जब मल्लिका की कुटिया में आता है तो वह उसकी सेवा - सुश्रुषा कर उसे स्वयं करती है। विरुद्धक द्वारा अपने पूर्व दगित प्रेम प्रकट करने पर मल्लिका अपने नैतिक आदर्श के कारण ही उस पर विजय प्राप्त करती है। इससे प्रभावित होकर विरुद्धक को कहना ही पड़ता है - (उदारता की मूर्ति। मैं किस तरह तुमसे, तुम्हारी कृपा से अपने प्राण बचाऊँ। देवी! ऐसे भी जीव इसी संसार में हैं, तभी तो यह भ्रमपूर्ण संसार ठहरा है।)[14] मल्लिका का आदर्श करुणाप्लावित रूप हमारी आत्मा, हृदय व बुद्धि को झकझोरता हुआ सीधी अन्तःपटल को स्पर्श करता हुआ एक नई चेतना को जागृत करता है, जिसके कारण प्रत्येक मानव को विश्वमैत्री के स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं।

मल्लिका अपने हृदय में विश्व मैत्री का संदेश लिए, करुणा के उद्रेक के साथ, अपने आचरण की शुद्धता के कारण सभी आततायियों को निर्मल कर उन्हें शांति, स्नेह, करुणा तथा मर्यादा का बोध कराती है।

निष्कर्ष

यह सत्य है, सद्विचारों से युक्त नारी अपने उच्च सत्कर्मों के द्वारा ऐसे भव्य आसन पर बैठने की अधिकारिणी है जहाँ वह पूज्या बन जाती है। भगवती माँ स्वरूपा नारी चाहे तो क्या नहीं कर सकती। संपूर्ण सृष्टि के मूल्यों की असीम शक्ति नारी के हृदय में है, उसके चिरस्थाई गुणों कोमलता तथा भव्यता के कारण। जिसे सिद्ध कर दिखाया है मल्लिका ने। उसके खरेपन के कारण ही सभी तामसी प्रवृत्तियों से युक्त पात्र कंचन बनते हैं। वैयक्तिक क्षेत्र में यही पातिव्रत्य धर्म का पालन करती है तो सामाजिक क्षेत्र में वह व्यापक करुणा का निर्वाह करती है। उसके उदार व्यक्तित्व को देखकर ही श्यामा का यह अनुभव करना कि जिसे काल्पनिक देवत्व कहते हैं, वहीं तो सम्पूर्ण मनुष्यता है, उसके चरित्र का यथार्थ अनुभव है। करुणा से युक्त हृदय ही सच्चा वर्ग है -

'स्वर्ग है नहीं दूसरा और।
सज्जन हृदय परम करुणामय यही एक है ठौर।।
सुधा - सलिल से मानस जिसका पूरित प्रेम विभोर।
नित्य - कुसुममय कल्पद्रुम की छाया है इस ओर।'[15]

अततः मैं कहना चाहूँगी कि नारी की कोमलता, करुणा-सिक्तता तथा भव्यता आदि गुणों के कारण ही व्यष्टि का समष्टि में मेल संभव है। वह दिन दूर नहीं जब संपूर्ण विश्व नारी के इन्हीं आदर्शों को अपना कर चलते हुए एक कटुम्ब की तरह दिखाई दे। नारी चरित्र के कोमल व विराट बिंब के कारण ही यह संभव है।

'नारी जननी, दुहिता, भगिनी, संगिनी,
नारी दुर्गा, तू अम्बे, तू महाशक्ति,
नारी! पूज्या। तू स्नेहमयी, तू करुणामयी,
कोमल भी तू विराट भी तू।'

संदर्भ

1. प्रो. जयनाथ नलिन: हिंदी नाटककार – पृ. 85.
2. जयशंकर प्रसाद: अजातशत्रु – पृ. 87.
3. जयशंकर प्रसाद: स्कंदगुप्त – पृ. 142.
4. वही, पृ. 155.
5. वही, पृ. 98.
6. वही, पृ. 102.
7. वही, पृ. 66.
8. वही, पृ. 108.
9. वही, पृ. 143.
10. जयशंकर प्रसाद: अजातशत्रु – पृ. 88.

'स्त्रियों का कर्तव्य है कि पाशव - वृत्ति वाले क्रूरकर्मा पुरुषों को कोमल और करुणाप्लुत करें। कठोर पौरुष के अनंतर उन्हें जिस स्नेह की आवश्यकता है - उस स्नेह, शीतलता, सहनशीलता और सदाचार का पाठ उन्हें स्त्रियों से ही सीखना होगा। हमारा यह कर्तव्य है।'

11. वही, पृ. 42.
12. वही, पृ. 62.
13. वही, पृ. 54.
14. वही, पृ. 84, 85.

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी - जयशंकर प्रसाद।
2. देवेश ठाकुर - प्रसाद के नारी पात्र।
3. डॉ गोविंद चातक - प्रसाद के नाटक: स्वरूप और संरचना।
4. डॉ नगेन्द्र - आधुनिक हिंदी नाटक।
5. डॉ- रमेश गौतम - प्रसाद के नाटक: युग साक्ष्य।